[Maru et. al. Vol.6 (Iss.3): March, 2018]
(Received: Feb 08, 2018 - Accepted: Mar 20, 2018)

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1218549

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

सम्प्रेषण दक्षता विकास में नाट्यीकरण प्रक्रियाओं की भूमिका

रविन्द्र कुमार मारू *[1], **डॉ. गिरिराज भोजक** [2]
*[1] शोधार्थी, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान
[2] सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान

सार-

एक विद्यार्थी के सन्दर्भ में सम्प्रेषण सम्बन्धित बहुत सी समस्याएं देखी जा सकती हैए ये किसी विद्यार्थी की व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं विद्यालयी भी हो सकती है। ऐसे में सम्प्रेषण कौशल के क्रमिक विकास के अवरुद्ध हो जाने के अलावा, उसमें सम्प्रेषण से सम्बन्धित कई ऐसी व्याधियां प्रविष्ठ हो सकती हैं जो कालान्तर में उसके समग्र विकास को प्रभावित करती है। इस नितांत गम्भीर विषय पर एक गहन चिन्तन व चर्चा करना ही इस शोध.पत्र का मूल उद्देश्य है।

मुख्य शब्द – सम्प्रेषण; दक्षता; विकास और नाट्यीकरण प्रविधियां.

Cite This Article: रविन्द्र कुमार मारू, डॉ. गिरिराज भोजक. (2018). "सम्प्रेषण दक्षता विकास में नाट्यीकरण प्रक्रियाओं की भूमिका." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 6(3), 293-297. https://doi.org/ 10.5281/zenodo.1218549.

1. प्रस्तावना

आज का युग सम्प्रेषण और प्रदर्शन का युग है, विद्यार्थी जीवन में ही सम्प्रेषण क्षमता का सर्वाधिक विकास सम्भव है। विद्यार्थी अपने विचारों एवं अभिव्यक्तियों को समाज के अन्य घटकों के समक्ष सम्प्रेषित करने की कला सीखता है।

हमारे विचार, सोच और भावनाओं को अन्य लोगों तक पहुंचाना ही सम्प्रेषण है। मनुष्य जन्म से मृत्यु तक स्वयं के मनोभाव लोगों तक पहुंचाता रहता है। सम्प्रेषण को परिभाषित करते हुए **डॉ लक्ष्मीलाल ओड** ने लिखा है- "सम्प्रेषण तभी प्रभावी बनता है, जब विद्यार्थी मनन करे, ना कि निष्क्रिय भाव से सुन ले या समझ ले।" **पाब्लो फ्रेरे** के शब्दों में- "सम्प्रेषण ही सच्ची शिक्षा है, वह शिक्षण की रीढ़ है, सम्प्रेषण के बिना अध्यापन सम्भव नहीं है।" **पाश्चात्य शिक्षाशास्त्रियों** के अनुसार "सम्प्रेषण केवल शाब्दिक ही नहीं होता, अशाब्दिक अर्थात शरीर के हावभाव से भी होता है।"

एक विद्यार्थी के सन्दर्भ में सम्प्रेषण सम्बन्धित बहुत सी समस्याएं देखी जा सकती है, ये किसी विद्यार्थी की व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं विद्यालयी भी हो सकती है। विद्यार्थी का सम्प्रेषण कौशल तात्कालीन परिवेश से भी असंपृक्त होता है। ऐसे में सम्प्रेषण कौशल के क्रमिक विकास के अवरुद्ध हो जाने के अलावा, उसमें सम्प्रेषण से सम्बन्धित कई ऐसी व्याधियां प्रविष्ठ हो जाती हैं, जो कालान्तर में उसके समग्र विकास को प्रभावित करती है। विदित रहे कि नकारात्मक

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.1218549

सम्प्रेषण ही वर्तमान समय में बच्चों- अभिभावक-परिवार, विद्यार्थी-शिक्षक-शिक्षणतन्त्र तथा नागरिक-समाज-व्यवस्था में टकराव का कारण बन रहा है। किशोरावस्था में विद्यार्थीयों से सम्बन्धित मूल समस्याएं- उपलब्धी स्तर में कम प्राप्तांक होना, सह-शैक्षणिक गतिविधियों में भाग नहीं लेना, कम मित्र होना, विद्यालय या कक्षाओं/शिक्षकों के प्रति स्थायी नकारात्मक भाव बना लेना, आत्मविश्वास की कमी, भोजनावकाश एवं विद्यालय उपरान्त स्वयं को अलग-थलग रखने की प्रवृत्ति आदि हैं। उक्त समस्याएं प्रभावी सम्प्रेषण की कमी के चलते ही होती है। वर्तमान समय में विद्यार्थी पढने में कितना ही होशियार हो यदि वह स्वयं को सम्प्रेषित नहीं कर पा रहा है, तो ये निश्चय ही चिंताजनक बात है। वहीं पढने में औसत विद्यार्थी यदि स्वयं को प्रदर्शित कर पा रहा है, तो सफल होने के अवसर ज्यादा माने जायेंगे।

विद्यार्थी सम्प्रेषण विकास का अध्ययन मनोविज्ञान निहित है। यह प्रशिक्षण मनोविज्ञान के अधिक समीप है। इसलिए इसे प्रशिक्षण मनोविज्ञान का ही अंग मानते है। **लेव व्योगोत्सकी** का मानना था कि बालक दैनिक जीवन में प्रत्ययों व अवधारणाओं से भी सीखता है।विद्यार्थी समूह, अध्यापकों एवं संदर्भित ढाँचे से सीखते हैं, जब बालक के सम्मुख वयस्कों द्वारा पूर्व स्थापित अवधारणा को प्रस्तुत किया जाता है तो उसे अपनी स्मृति में धारण कर लेता है। इसके पश्चात वह उस सामान्यीकरण पर स्वयं विचार करता है। लेकिन बालकों को अपने साथियों से प्रभावित भी होना चाहिए और स्वयं का अन्वेषण करते रहना चाहिए।

महान वैज्ञानिक **चार्ल्स डार्विन** की "द एक्सप्रेशन आफ द इमोशन इन एनिमल")1872(में प्रकाशित पुस्तक चेहरे की भावाभिव्यक्ति और बाडी लेंग्वेज के आधुनिक अध्ययनों की बीज थी, डार्विन का तर्क था कि सभी स्तनपायी अपने चेहरे पर भावाभिव्यक्ति दर्शाते हैं। सुप्रसिद्ध लेखिका **शोभना खंडेलवाल** ने सम्प्रेषण को समझाते हुए बताया है कि - "वास्तव में सम्प्रेषण, कहे गये या लिखित शब्दों से कहीं अधिक होता हैA सम्प्रेषण में अनेक बातों का योग होता है, जैसे-प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में जाने या अनजाने शब्दों का प्रेषण, प्रवृत्तियाँ, भावनाएँ, क्रियाएं, इशारे या स्वर। कभी-कभी शान्ति भी प्रभावपूर्ण सम्प्रेषण का कार्य करती है, उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति के मुखारविंद पर पड़े हुए बल अस्वीकृति को इतनी स्पष्ट भाषा में प्रकट करते हैं जो सौ शब्दों द्वारा भी प्रकट नहीं की जा सकती। इसी प्रकार कहने का ढंग या मनुष्य की वाणी भी कभी-कभी शब्दों से अधिक प्रभावपूर्ण होती है।"

वर्तमान शिक्षा प्रणाली अनुशासन के नाम पर विद्यार्थियों के कानों को "शटअप", "सिट प्रोपरली", "फिंगर ऑन दी लिप्स", जैसे उत्प्रेरक नारों से गुंजायमान कर देती है, फलस्वरूप उसकी कोमल किन्तु मौलिक अभिव्यक्ति की भावनाओं पर लगाम लग जाती है। जरूरत है उनके जिज्ञासु बाल रथों को उनके नैसर्गिक पथों पर स्वतंत्र विचरण कराने की। और इस हेतु जरूरत होगी उनके मस्तिष्क और शरीर को अनुमति देने की, एक ऐसे तालमेल को स्थापित करने के लिए, जो ना सिर्फ विद्यार्थी विशेष की सम्प्रेषण दक्षता को बढावा देगी अपितु उसके मानसिक विकास को उचित अवसर प्रदान करते हुए हुए उनके उपलब्धि स्तर को एक सफल भावी जीवन की राह अग्रसर करेगी।

वर्तमान में कोटा (राजस्थान) के एक निजी विद्यालय में कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों के साथ चल रहे उक्त शोध में ड्रामा नाट्य प्रविधियों का प्रयोग किया जा रहा है। शिक्षा प्रक्रिया में नाट्यीकरण प्रक्रियाओं का अनुप्रयोग कक्षा में सीखने-सिखाने के लिए प्रयुक्त किया जा रहा है। इस शोध में विविध थिएटर प्रक्रियाओं एवं तत्वों यथा थियेटर गेम्स, रोल प्ले, इम्प्रुवाइजेशन, वार्ता, समूह-वार्ता, हॉट-सीट, आदि के माध्यम से विद्यार्थियों के वैयक्तिक विकास के विविध आयामों में से सम्प्रेषण दक्षता में विकास के साथ उपलब्धि स्तर प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रस्तावित शोध की विषय-वस्तु पर भारत में किये गये कार्यों की संख्या कम है, तथापि विदेशों में इस प्रकार के अध्ययन व्यापक स्तर पर किये जा रहे है और उनके परिणाम नियत स्थानों पर नियमित रूप से लागू भी किये जा रहे है। शिक्षा में रंगमंच के विषय पर कई महानुभावों, साहित्यकारों, शिक्षाविदों नाटककारों, इतिहासकारों एवं विविध संस्थाओं ने अपने लेख, अध्ययन, अनुभव, विचार, आदि प्रकाशित एवं प्रसारित किये हैं जो सहज ही अवलोकन एवं पुनरावलोकन हेतु उपलब्ध हैं, जिनमें से कुछ निम्नानुसार है:- **स्वर्ण रावत** ने थियेटर का शिक्षा में महत्व को जानने के